आदमी किस ओर ?

Mohammed Hassan, III B. Sc.

हम जानते हैं कि प्रपंच के आरंभ में जब से मनुष्य इस दुनियाँ में दीख पडे तब से वे बर्बरता में पडे थे। पर धीरे-धीरे अपनी परिस्थिति के अनुसार अपनों को बदलकर जिन्दा रहने की ताकत उनको मिली। यह तो निस्संशय है कि इस दुनियाँ में जो कुछ इश्वर ने सिरजा हैं वे हम सब केलिए किसी न किसी काम में आते हैं। पर आदमी इन चीजों को न केवल उपयोगी बनाते हैं बल्कि नाशकारक भी बनाते हैं। हम सब जानते हैं मनुष्य जानवरों से ज्यादा अक्रमन्द हैं। पर कभी-कभी हम ऐसा करने लगते हैं जिनसे जानवर भी देखकर शरमा जाते हैं। पहले यह कहा जा चुका है कि इश्वर ने प्राणियों केलिए सबकुछ बनाया है। पर इन्हें उपयोगी बनाना मनुष्यमात्र के हाथ में निर्भर है।

अणु एक ऐसा पदार्थ है जो सर्व व्यापी है सर्वशक्तिमान है और चिरंजीवी भी है। कोई भी इसकी शक्ति का अंदाजा नहीं कर सकते। आज यह शक्ति कौन सा खेल खेल रही है और खेलती है नाचती है नचाता है यह कोई भी नहीं कह सकता। हम को यह मालूम है कि पिछले दोनों महायुद्धों ने क्या क्या किया हैं। उन दोनों का कटु अनुभव आज भी हमारे दिल में है। युद्धों में विज्ञान और वैज्ञानिक ने क्या क्या किया हैं, क्या यह कहा भी जा सकता है ?

युद्ध ही खास कारण था अणुबम के आविष्कार में। और हैड्रजन बम, कोबालट बम रोकट बगैरह भी सायनस की देन हैं। जिस शक्ति को मनुष्यमात्र की भलाई में इस्तेमाल कर सकते हैं उस शक्ति को मनुष्यशरिर के नाश में युद्ध लालस शक्तियाँ चलाती हैं। एक बम के गिरने से एक नगर ही नहीं बल्कि एक साम्राज्य का ही समूल नाश हो सकता है। पिछले महासमर में अमेरिका ने एक अणुबम हिरोषिमा और नागसाकी में गिराकर करोडों लोगों की हत्या की है।

आदमी विज्ञान से सारी जनता को सुखी और दुखी भी बना सकता है। अणुशक्ति से चलने वाली पनडुब्बियाँ कुछ ही घण्टों में कई हज़ार मील दूर चल सकती है। बहिराकाशयात्रा करने में अणुशक्ति का प्रधान हाथ है। पर केवल नाश को ही हमें नहीं देखना चाहिए। जो अब हम खाते पीते हैं और साँस भी लेते हैं उनमें भी विज्ञान का प्रधान हाथ है। लेकिन आज की ज्यादातर पाश्चात्य-शक्तियाँ दिनों दिन विज्ञान को प्रतिद्वन्द्वी राष्ट्रों के खिलाफ घुमाते रहते हैं। इससे न केवल पाश्चात्य राष्ट्र ही आपत्ति में पडते हैं बल्कि सारा भूगोल भी आपत्ति में पडता है। अगर मनुष्य अच्छा हो और उसकी बुद्धी नेक हो तो कुछ भी हानि नहीं हो सकती। पर क्या यह हम कह सकते हैं कि "मनुष्य किस ओर जाता है"?

बूढी

Mohammed Ambalangadan, P. S.

एक मंगलवार था। पिछले दिन आराम लिये बिना काम में लगे रहने से बडी देर से मैं सोया था। सबेरे पास आकर माँ ने कहा, "अरे बेटा जागो, स्कूल पहुँचने में देरी होगी"।

माँ की आवाज़ कान में पडी तो मैं जागा और हाथ-मुँह धोने केलिए बाहर आकर कुए की ओर चला। नहाने के बाद चाय पीकर स्कूल की तरफ मैं जाने लगा।

आधा मील चलने पर रास्ते के एक कोने में बैठी दुबली पतली एक बूढी पर मेरी नज़र पडी। उसके सिर के ऊपर जो बाल मैं ने देखे, बिलकुल सफेद हो चुके थे। रास्ते से आनेजानेवाले सभी यात्रियों पर वह अपनी दृष्टि डाल रही थी। दीन नयन से उसने मुझे देखा और कहा,

"हे बच्चा, बडी देर से मैं यहाँ बैठी हूँ। आप लोग चाहें तो दादी की भूख मिट जायगी। मेरी सहायता करें। ईश्वर बच्चे की रक्षा करेगा"।

वह बराबर मेरे मुँह पर आँखें लगाये रहीं। वह परेशान थी। उसे देखने पर हृदय जल जाता था। मेरे पास चार चार आने के केवल तीन सिक्के थे। उस बूढी की सहायता करने में मैं निस्सहाय था। बिना कुछ कहे मैं चल पडा। तब मैं ने बूढी की ऊँची आवाज़ सुनी। वह कह रही थी "हे खुदा तू सब का परवरदिगार है। मैं भी तुम्हारी सृष्टि हूँ। तू ने पहले मेरे बेटे को बुलाया। इस बुढापे में पति जो मेरी सहायता करने केलिये मेरे पास था अब तेरे पास चला"।

स्कुल से हमें छुट्टी मिली तो हम बाहर आकर गेंद खेलने लगे। शाम के खेल के बाद हम छात्र घर लौटने लगे। सब कहीं चिडियाँ चहक रही थीं। अंधेरा छाया हुआ था। सूरज समुद्र में छिप चुका था। मेरे मन में बूढी की याद आ गयी। अब भी वह वहाँ बैठी थी। यात्रियों का आनाजाना कम हुआ। धनिक लोग अपने बच्चों के साथ हँस रहे थे। किन्तु हमारी बूढी का हृदय तडपने लगा।

उसे कुछ देने की इच्छा मेरे मन में आयी। लेकिन खर्च ज़्यादा होने के कारण मेरी जेब में एक भी पैसा नहीं था। मैं ने अधिक नहीं सोचा। घर पहुँचने पर मैं एक कुर्सी पर बैठा। फिर क्या हुआ। वह मैं नहीं जानता। मैं सोया हूँगा।

अगले दिन बूढी केलिए दो सिक्के हाथ में लेकर मैं बूढी की प्रतीक्षा में गया। मेरे सब दोस्त क्लास पहुंचे होंगे। मुझे जान पडा कि वह स्थान अब खाली है याने वह बूढी वहाँ नहीं थी। पास के घर के एक बालिका से मैं ने पूछा, "इधर सडक पर बैठकर भीख माँगनेवाली औरत अब कहाँ होगी"?

उसने जवाब दिया, "वह कल रात को मर गयी"। तब मुझे ऐसे लगा जैसे किसी ने मेरे मुँह पर एक थप्पड मारा हो।

चिडियाँ भी अपने मित्र को प्यार करती हैं

Hamsa K. M.

कौआ हमारे एक सुपरिचित पक्षी हैं। बचपन में से हमने कौए के बारे में कई कहानियाँ सुनी थीं। हम ने कई बार कौए को हमारे छोटे भाई के हाथ से या छोटे बच्चों के हाथ से भोजन की वस्तुएँ छीनने की कोशिश करते देखा है।

इस छोटे लेख में पहले मैं कौए की मित्रता के बारे में एक अनुभव की घटना का उल्लेख करता हूँ। एक दिन मैं एक वृक्ष के नीचे बैठा था। पास एक घर के आंगन में सुखाने केलिए कुछ अनाज बिखर दिये थे। उसके पास एक लडका बैठता था। उस समय एक कौआ चारों ओर उडकर उससे कुछ लेने का परिश्रम करता था। कई बार कौआ अनाज के पास आता था। लेकिन लडके ने हर बार कौए को उडा दिया था। अंत में लडके को क्रोध आया। उसने एक पत्थर लेकर कौए को फेंका।

अचानक कौआ गिर पडा। वह लडका कौए के पास गया। यह देखकर वहाँ अनेक कौएँ आये। कौएँ वहाँ चारों ओर मडरा कर उडने लगे। कौएँ लडके पर आक्रमण करने लगे। लडका डरकर घर के अंदर घुस गया। कुछ समय तक कौए अपने साथियों के साथ उड गये। मैं ने सोचा कि पक्षी अपने साथी की रक्षा केलिए कितना त्याग करते हैं।

आज के कुछ मनुष्य इन पक्षियों से नीचे दर्जे में आते हैं। वे लोग दूसरों को कष्ट देने का परिश्रम करते हैं। यह बात हमारेलिए बडी लज्जा और निराशा की बात है। क्यों कि केवल कुछ कौएँ उनके दोस्त की रक्षा केलिए जान देने को भी तैयार होते हैं।

यह लिखते समय मेरे मन में करीब छे: वर्ष पहले की एक घटना याद आती है। एक घर में एक मुर्गी और एक कुत्ता थे। एक दिन मैं घर में बैठ रहा था। घर के बाहर मुर्गी कुछ भोजन की चीजें खाती थी। उस समय वहाँ एक कुत्ता आया। कुत्ता वह भोजन छीन कर खाने लगा। मुर्गी को क्रोध आया। वे अन्योन्य झगडा करने लगे। तब मैं ने वहाँ जाकर कुत्ते को अलग किया।

इससे मुझे एक पाठ मिला कि अच्छा मित्र अपने दोस्त के सुख दुखों में भाग लेता है। मेरी आशा है मनुष्य कौए के समान दयालू हो और मुर्गी और कुत्ते के समान स्वार्थी और झगडालू न हो।

एक सपना

Padmini P. — II B. Sc.

वह एक सुन्दर दिन था। मैं सबरमती में गाँधिजी के आश्रम में खडी थी। उस दिन एक बडा सम्मेलन हो रहा था। आश्रम के बाहर खादी धारी हज़ारों लोग और स्वयं सेवक खडे थे। मैं तो अकेली थी। कुछ लोग मेरी ओर देखते थे और मुझे लज्जा आती थी। उस प्रकार दाई घंटे बीत गये तो मन्त्र मुखरित हाल में भारत का वह आत्मीय पुरुष अपनी बेटियों के कन्धों पर हाथ रखकर पधारते थे। देखते ही मेरा मन उछल गया। और मैं "बापूजी" चिल्लाकर आगे बढी। सबरमती में आते समय मैं ने अपने बगीचे से कुछ रंगीन गुलाब के फूल लायी थी और उन फूलों को मैं ने बापू के पैरों पर चढा दिया और भक्ति के साथ उन के पैर चूमने लगी। बापू ने मुझे उठाया और मुसकुराते हुए मेरी ओर देखा और वीणा से अधिक मधुर स्वर में पूछा, "बेटी तुम्हारा नाम क्या है"। मैं लज्जा के साथ बोली "रीता"

बापूजी मेरा हाथ पकडकर स्नेह के साथ बोले "तो क्या मेरे स्वंय सेवक संघ में शामिल होने केलिए आयी हो या केवल मुझे देखने आयी हो?" मैं तुरन्त बोली "आप को देखने केलिए और आशीरवाद लेने केलिए आयी हूँ, बापूजी"। अब बापू एक बच्चे के जैसे हँस पडे और कहा "तो क्या तेरी शादी हुई है" मेरा चेहरा तो लज्जा से लाल हो गया और मैं ने सिर झुकाया और धीमी आवाज़ में कहा "जी नही बाबू मैं तो अपनी जनता और उसकी भलाई केलिए कुछ करना चाहती हूँ और उस महान प्रयत्न केलिए आप की आशिष माँगने केलिए आयी हूँ।

बापू का मुख गंभीर हो गया उन्होंने कुछ देर तक मेरी ओर देखा और गंभीर स्वर में कहा "तो अच्छा बेटी, मैं यही देख रहा हूँ कि आज के भारत की हालत बडी शोचनीय है। यहाँ दरिद्रता, बीमारी और असमता ही नाचती हैं और मैं ने जब इस दुनियाँ से गया था तो मेरी एक ही वेदना यह थी कि भारत के भविष्य की बात किस पर रखें अब मुझे अपने सवाल का उत्तर मिला। तुम्हारे जैसे आदर्शधीर और आवेश भरित युव-युवतियों भारत-माता की सन्तान हो तो यहाँ कोई कष्टता और कठिनाई नही आयेगी। मुझे धैर्य है, विश्वास है। आवो, मैं तुम्हें अपने स्वयं सेवक संघ का एक अग बनाऊँगा और आज से तुम्हारा गृह यह आश्रम है सारे भारतीय तुम्हारी माँ-बाप और भाई-बहन!"

मैं ने इस वाक्त धारा के सामने निश्चिन्त हो पडी। मुझे न जाने क्या करूँ। एक साथ धैर्य और अधैर्य, विश्वास और अविश्वास मुझे हिलाने लगे। यह सच है कि मैं ने बापू के अन्तेवासिनी बनना चाहती थी। लेकिन माँ-बाप क्या कहें, अगर वे अनुमति न दें तो क्या करूँ? कुछ देर इस प्रकार पसोपेस में खडी थी। यह देखकर बापू ने मुसकुराते हुए कहा "रीता, तुम क्या सोचती हो। अब घर जाकर माँ-बाप से अनुमति लेकर कल आओ, मैं ज़रुर तुम्हें यहाँ रहने दूँगा"। उनकी मधुर आवाज़ सुनते ही मेरे हृदय का सन्देह दूर हो गया। मैं बाहर जाने केलिए दौडी तो बापू ने कहा "लेकिन बेटी एक शर्त है। मेरे अनुयायी लोग सिलक तो पहन नही सकते और कोई कीमती ज़ेवरात। और इसलिए मुझे प्रेवश शुल्क के द्वारा तुम कुछ देना है, क्या कोई कठिनाई है?" मैं उनका व्यंग समझ गयी, मैं ने अपने गले में एक सोने का हार और

हाथ में ककण पहनती थी, उन्हें उतार कर बापू के हाथों में रखा और कहा "ईन्हें रखिये बापू, आप के हरिजन निधि केलिए"। तब मेरा हाथ किसी ने पकडा और मैं ने उसकी ओर सिर झुकाया तो देखा कि मेरी माँ वहाँ खडी थी। उन्होंने पूछा "रीता तुम पागल हो गयी? क्या सपना देख रही हो। तेरे ककंण और हार तो बिस्तर के नीचे पडा है। क्या तुम ने गिराये"? मैं सब कुछ समझ गयी. मैं ने बापू को देखा। केवल सपना देखा था और मुझे याद आयी कि, सोने केलिये जाने के पहले मैं ने बापू की जीवनी के बारे में एक अंगरेज़ लेखक की लिखी किताब पढी थी और जो बातें मैं ने पढी, वे सपने मैं यथार्थ हो गयी। बडी विचित्र बात थी यह।

अपना हार और ककंण लेकर मैं ने मुसकुराती हुई माँ से कहा "मैं ने बापू को देखा माँ और उन से बातचीत भी हुई," और देखा कि माँ भी मेरी बेवकूफी समझकर हँसती थी। क्या मैं भाग्यवती हूँ न, मैं ने बापू को देखा, सपना होने पर भी।

कौन रोकेगा . . . ?

Praveen Kumar, B. Com. I

"अरे यार, छोडो उसको, उसे क्यों बुलाते हो? उससे तुम्हारा क्या मतलब? उस आवारे को अकेले ही जाने दो न।" एक दोस्त ने, जब मोहन ने रमेश को बुलाने की चेष्ट की, तब ऐसा कहा!

रमेश की हालत भी देखने लायक थी! उसके बाल और उसकी दाढी काला जंगल जैसी लगती थी; उसका मुंह यद्यपि गेहूँ वर्ण का और तेज था, पर जिस तरह लालटेन का काच मैश से काला होता है, वैसे ही मैल से काला हो गया था; और कपड़ा कई वर्षों से पहना हो ऐसा मालुम होता था, और बदबू ने भी अपना सम्राज्य जमा दिया था; उस कपडे में इतने चिथडे लगे थे कि असली रंग मालुम नहीं होता था। रमेश इसी तरह अपने साथ भोंकते कुत्तों की झुंड को लेकर आ रहा था!

रमेश को आते देखकर उसके एक समय के पक्के मित्र जानी अनजानी कर देते थे। यह वही रमेश था जिसने कभी इम्तहान में पहला क्रम नहीं छोडा, यह वह ही था जब गाता तब सब लोग वाग वाग हो जाते थे; और जब उसके चित्र कला के प्रदर्शन में लोग देखते थे, तब दांतो तले अंगुली दबा देते थे। उसके साथ हमेशा विद्यार्थियों की टोली रहती थी। उस समय रमेश को मित्र बनाने में गर्व करते थे। पर आज जिस तरह सर्प अपने शरीर से पतली चमडी छोड देता है, उसी तरह वे रमेश को त्यज रहे थे। लोग निकलते सूर्य को पूजते हैं न!

रमेश एक गरीब आदमी का लड़का था, वह पाँच सन्तानों में सबसे बड़ा था। उसके पिता दो सौ रूपया एक महीने में कमाता था। वह अपने जीवन में एक सांधता तो सौ टूटता था। रमेश पहले से ही बुद्धिमान था, लोगों को उस से बडी आशा थी। रमेश ने भी कई छात्रवृत्ति पाकर अपनी पढाई आगे बढाता रहा। और सोचता था कि बी. ई. होकर अपने कुटुंब एवं देश की हालत सुधारेगा।

रमेश ने एस. एस. एल. सी. में सारे प्रान्त में दसवाँ क्रम लिया। उसके बाद एक के बाद एक मंजिल हासिल करता रहा, और अंन्त में वह बी. ई. [सिविल] में प्रथम कक्षा में उत्तीर्ण हुआ। उसके पिता के आनंद की सीमा न रही। उसको भी लगा कि अब उसके बहारों के सपने यथार्थ होने वाले हैं, पर वह सपना सपना ही रहा। ओह! मानव क्या सोचता है और क्या बनता हैं! हम तो कठपुतलों जैसे नचाये जाते हैं।

वास्तविक जीवन ही एक ओर जीवन ह। वह नौकरी ढूँढने निकला। पर उसने क्या पाया कि यहाँ एक हवा चल रहे है कि आदमी बहार से शक्कर की तरह मीठा दिखाई देते हैं, पर वह अंदर के कोयले की तरह कलवा हानि पहुँचाने वाला हैं। लोगों ने उसे दिलासा दिया, "अरे भाई! आप क्यों डरते है? आप जैसे अच्छे विद्ययार्थी को हम नौकरी नहीं देगें तो किसे देंगें?" पर उसने अपनी नियुक्ति का समाचार कभी नहीं पाया। उसने देखा कि जिन जगहों से आशा रहती थी, उन जगहों पर उस से अयोग्य और दो-तीन बार अनुत्तीर्ण होकर, पास होनेवाले बैठे थे और देश की भलाई कर रहे थे! इस कारण का पता लगाया तो मालुम हुआ कि जिस जगह "बिना रज़ा अंदर आना मना है।"

वहाँ "बिना सिफ़ारिश और चंदा अंदर आना मना है।" ऐसा प्रतीत हुआ। उसका साथी मोहन अपने चाचा की सिफ़ारिश के कारण एक 'प्राईवेट' कंपनी में जुनियेर इन्जीनियेर के पद पर नियुक्त किया गया। और दूसरा सुरेश, जो कुछ मध्यम वर्ग से उच्च स्तर का था, उसने 600 रु. रिश्वत देकर पी. डबल्यु. डी. विभाग में इन्जीनियेर की पदवी प्राप्त कर ली, और अपने बहारों के सपने यथार्थ बनाने में जूट गये। उन दोनों पर विधि को चारो हाथ थे। यह हमारा रमेश गरीब था इसीलिए उस का भाग्य भी गरीब होना चाहिए न!

रमेश भी आदमी था, उसे इन नियुक्तियों पर दुःख तो हुआ। पर उसे इस बात का आनन्द था कि मेरे मित्र तो अपने काम में जूट गये। और दूसरी ओर दोनों मित्र नौकरी मिलने से आसमान पर नहीं चढ गये। उनको रमेश की बात से बड़ा दुःख था, उसे बार बार दिलासा देते थे। वे खूब जानते थे कि रमेश की कार्यक्षमता उनसे बहुत अधिक है, वे उसकी बराबरी में कुछ नहीं है। परिस्थिति से उनको "प्रेकटिकल मेन" बनना पडा। वे समाज की इन सभी बुराईयों को दूर करना चाहते थे, पर वे मज़बूर थे!

जब उस दिन रमेश के बारे में निंदा सूनी तो आग बबूला हो गये, पर वह अंदर ही रह गयी! वे दोनों रमेश से मिलने बाहर आये। उन लोगों ने उसका हालचाल पूछा। तब रमेश ने उत्तर दिया, "मेरी हालचाल पूछकर क्यों मज़ाक उडाते हो? ये कुत्ते बस है न?" ये बात सुनकर दोनों मित्रों को लगा कि जब भूखे आदमी को एक रोटी का टुकडा दिया जायें तब वह उसे ठुकरायेगा।

और रमेश लल्लूकता हुआ चल पडा। वह इतना लल्लूकता था कि अभी गिर जाये, ऐसा प्रतीत होता था! अरे रे! उसको गिरने से कौन रोकेगा.....?

"ओ चाँद मैं आ रहा हूँ।"

P. K. Hakeem, II B. Sc.

ओ चाँद! रात में अमृतवर्षा करती हुई, गहरे नीले आकाश में जब तू दिखायी पडती है तो मन में क्या क्या भाव उठते हैं; इस का वर्णन करना मुशकिल है। मनमोहित करनेवाली तेरी सूरत देखकर मैं अपने आप को भी भूल जाता हूँ। प्यारी! तू कितनी हसीन है! कितना सुन्दर है तेरा चेहरा! चांदनी की वर्षा करनेवाली तुझे देखकर हृदय में छिपी सुन्दर भावनाएँ जाग उठती है। इसलिए, हे सुन्दरी, तेरा सलाम करता हूँ, तू जीते रहो!

रात तो है। उसका सौंदर्य भी है। अगर तू न होती तो रात को कौन मानेगा? मालूम होता है कि तेरा सौंदर्य देखकर खुशी मनाने केलिए ही इस दुनियाँ में रात का निर्माण हुआ है। रात का सौंदर्य तुझ पर ही आधारित है।

प्रेमिका की याद दिलानेवाली तेरी सूरत! निराशा की छाया फैली हुई हृदय में आशा के किरणें जगानेवाला तेरा सुन्दर चेहरा! तुझे देख कर मैं कितना हर्षपुलकित होता हूँ इसका वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ। हे चाँद! तू सौंदर्य का प्रतीक है!

कवियों ने तुझ पर गाया है। तेरे बारे में सुन्दर कविताएँ लिख कर लोगों में प्रेम, दया, त्याग आदि सुन्दर भावनाएँ जगाने का सफल प्रयास किया है। तेरे प्रति प्रेम जगा कर सारे मानव के प्रति प्रेम जगाने की चेष्टा की है। अगर तू न होती तो कवियों की क्या दशा होती!

पर आजकल तो मुझे उतना आनन्द नहीं मिलता जितना पहले मिलता था। तू रात के अन्धेरे को तो दूर करती है। साथ ही साथ मेरे हृदय में अन्धेरा फैलाती है। तुझे देखते देखते मन में कभी कभी निराशा की छाया फैलती है। क्या, मैं तुझे पा नहीं सकता? क्या, मैं तेरे हृदय पर आवास नहीं कर सकता? इस के बारे में मैं कई वर्षों से सोचता आ रहा हूँ।

उत्तर मिला है। तू जानती है कि मैं कुछ दिन पहले तेरे पास आया था। मालूम होता है तू उस की कोई परवा नहीं करती! तू निश्चिंत दिखायी पडती है। चाहता हूँ कि अपना बाकी जीवन तुझी में बिताऊँगा।

इस का कारण है। इस दुनियाँ में मुझे कहीं संतोष नहीं मिलता। माँ हैं, बाप हैं, प्रेमिका है सब कुछ है। पर मन में निराशा की छाया पडी है। यहाँ मनुष्य अधिक हैं। संख्या अधिक होने से क्या फायदा होता है। आपस में परिचय तो रखते हैं। हसते हैं। रोते हैं। खुशी मनाने की चेष्टा करते हैं। लेकिन एक दूसरे पर विश्वास नहीं रखता। आपस में एक दूसरे पर हमला करते रहते हैं, चोट पहुँचाते रहते हैं, और स्वार्थ को सब से पहली चीज़ समझ कर मतलबी बनते चले जा रहे हैं। किसी का सच्चा प्यार नही है। स्नेह के बदले में घृणा मिलती है। ओ चाँद! रात के अंधेरे में इस दुनियाँ में क्या क्या नाटक खेले जाते हैं, क्या क्या अत्याचार किया करते हैं, उन सब को देखकर तू मुस्कुराती ही रहती है। तू बडी ही निर्दय मालूम होती है।

इस जीवन से मैं बहुत निराश हूँ। सोचता हूँ, इस संसार की अपेक्षा अधिक सुखशांति तुझ में मिलेगी। इसलिए, चाहता हूँ, तेरे पास आऊँ (मगर सुना है तुझ में भी दाग है)। क्या तू मुझे स्वीकार करेगी? न करने पर भी मुझे कुछ न होता। मेरी शक्ति तो तुझे मालूम ही है! तू न चाहे तो भी मैं तुझ पर निवास करूँगा!! आज न हो तो कल!!!

सपना

V. Bharathadas, II B. Sc.

बरगद की बेटी लहरां कैसी सुन्दरी है। वह वट के नीचे सादिक से बातें कर रही थी। अच्छा, यह सब क्लास में मास्टर जी लकचर देते हुए कह रहे है। क्या लहराँ और क्या सादिक? ऊपर देखा तो छत। कुछ समय छत को गिनते रहा फिर दरवाज़े की ओर देखा तो लडके बातें करते जा रहे थे। हाथ बाँध कर ऊँघने लगा।

लहराँ बरगद के पेड के नीचे सादिक से मिली। वे आपस में मीठी बातें करते रहे ....

आवाज़ धीरे-धीरे कम हो गयी। मैं एक राज्य में पहुँचा जहाँ सोने के पेड हैं, सुन्दर महल है और सुन्दर अनुभूतियाँ है। वहाँ अच्छे अच्छे मकान थे। लेकिन कहीं कोई आदमी न था। सोचते सोचते वहाँ के सुन्दर दृश्यों को देखते मै चारों ओर घूमा। तब वहाँ एक वटवृक्ष था। सुन्दर वृक्ष। उसकी शाखायें आकाश को छूती थी। सुन्दर हवा वह रही थी। मैं ने चारों ओर के दृश्य देखे।

पक्षी गाते थे और लतायं हँसती थी, अंधकार फैल गया। तब चान्द बादल से बाहर आयी दूध के समुन्दर के समान चांदनी फैल गयी। सारे दृश्य दूध में नहाये खडे थे। सर्दी होने लगी।

वट के नीचे देखा .... क्या देखा?

तब दो व्यक्ति! एक पुरूष और दुसरी स्त्री!! बढिया कपडे पहने थे। शाही पहनावे थे। वे दोनों बातें करते, हँसते, एक दुसरे के हाथ मिलाते रहे। वे थे सादिक और लहराँ।

मे उनके पास गया। उन्होंने मुझे न देखा। लहराँ कह रही थी। "जी सभी कहते हैं अनवर मुझ से प्यार करते है?"

"तो क्या?" सादिक ने पूछा "यह तो सत्य नहीं है"

"लेकिन अश्क जी ने विध्यार्थी यो से कह है कि मै अनवर से प्रेम करती हूं" लहराँ रोने तक पहुँची।

सादिक ने हँसते कहा "बेचारे अश्क हमारे बारे में कुछ नहीं जानता। आओ प्यारी, मेरे पास आओ"

लहराँ आँखें मूंद सादिक की छाती पर गिरी। सादीक के उछवास लहराँ के अलकों से खेलते रहे। सादिक अपने हाथ से लहराँ का सिर सहलाता रहा।

"आजा लहराँ" सादिक ने कहा— उस पूनम की चांदनी में लहरां और सादिक एक हो गये। तभी एक आदमी हाथ में खंजर लिये छिपे-छिपे वहां पहुँचा। चांदनी में वह खंजर चमक रहा था। वह आदमी काला था। देखने में भय हो रहा था। वह धीरे-धीरे लहरां के पास गया। उसने खंजर उठाया!! लहरां को इसका पता न था। अब क्या हुआ "जागो भाई, जागो" मेरी पीठ पर मारते हुए किसी ने कहा। जब मै ने आँखें खोलकर देखा तब मास्टर जी अपने चश्मा हटाये लाल आँखें दिखाते हुए मुझ से पूछा —

"सादिक का क्या हो गया"?

मै ने कहा "उस ने शादी की"

सभी लडके और लडकियाँ मेरी ओर देख कर फूट फूट कर हँसते थे। तो मुझे मालूम हुआ कि मै तो देख रहा था सपना।

त्याग

Abdurahiman P. II B. Sc.

एक सुन्दर घर। बरामदे में दो कुरसियां और एक मेज़ है। एक कुरसी पर गृहनाथ राम कुरुप बैठे हैं। कोलेज में पढने वाला कुमार आता है, और पिताजी को प्रणाम करता है।

राम कुरुप :— बेटा, तुम बहुत कमज़ोर दिखाई पडते हो। अरे क्या हुआ ?

कुमार :— पिताजी आज फुटबोल का मैच था। उसमें हमारे कालेज की विजय हुई। मैं भी उसमें खिलाडी था।

राम कुरुप :— अच्छा। तुम अपने भाई राजन को बुलाओ और माँ को भी लेकर यहाँ आओ।

[कुमार अंदर जाता है और पर्दा गिरता है।

पर्दा उठता है और सब लोग वहाँ थे]

राम कुरुप :— प्रिय जानकी, सुनो। मैं आज उस कलक्टर के घर गया था। कलक्टर के बाप ने कहा कि वे अपने पुत्र (कलक्टर) की शादी हमारी बेटी आशा के साथ कराने केलिए तैयार हैं।

जानकी :— भगवान ! मेरी प्यारी बेटी का भाग्य खुल गया है। आप वह जल्दी करा लीजिए।

रा-कु :— लेकिन उस कलक्टर को पाने में एक बाधा है, उनकी एक गूँगी बहिन है, उसकी शादी भी होनी चाहिए।

जानकी :— (बेटों से) तुम दोनों में से एक उसके साथ शादी करे। तुम्हारी बहिन केलिए ....।

बडा भाई कृष्ण :— माँ, मैं सच कह रहा हूँ, मैं एक गूँगी के साथ शादी न करूँगा।

जानकी :— ऐसा मत कहो, बेटा।

राम कुरुप :— कुमार, तुम उसके साथ शादी करो और परिवार केलिए त्याग को सन्नध्द हो जाओ।

कुमार :— पूज्य पिताजी मैं करूँगा जरूर। लेकिन एक बाधा है, मैं स्त्रियों को पसंद नहीं करता और इसलिए मैं आजन्म ब्रम्हचारी रहना चाहता हूँ।

राम-कुरुप :— क्या, तुम नहीं करोगे, अपनी बहिन केलिए एक त्याग न करोगे। दुष्ट कापुरुष। हट जाओ सामने से।

[सब अंदर जाते है]

राम कुरुप चिन्ता भरी दृष्टि से रहते हैं, तब भानजा दयाल बाबू आता है।

दयाल बाबू :— आप क्यों दुःखी दिखाई पडते हैं, इस बेचारे भानजे से कोई सेवा होनी है तो कहिये।

राम-कुरुप :— फः एभ्य, तुम मेरी दृष्टि से हट जाओ। मैं ने तुम को आज्ञा दी थी, कि, मेरे सामने न आओ।

(उसे चपत मारता है)

[जानकी रंगमंचपर आती है]

जानकी :— मेरी बेटी आशा का दुर्भाग्य है, उसके दो भाई हैं, लेकिन वे निर्दय हैं, अपनी एक मात्र सोदरी केलिए, एक त्याग करने केलिए तैयार न होते।

[रोती है]

राम कुरुप :— मेरे दो बेटे हैं, जो दयाहीन हैं। बहिन के ऊपर ज़रा भी वात्सल्य नहीं। मैं यह सहन कर नहीं पाता, मैं .... [जाने लगता है]

[दयालबाबू तुरंत आकर कहता है]

दयाल :— अम्मामा, मैं सब कुछ जानता हूँ। आशा मेरी बहिन नहीं है, फिर भी मैं उसे प्राण तुल्य प्यार करता हूँ। मैं उस कलेक्टर की गूँगी बहिन के साथ शादी करने को तैयार हूँ। मेरी "आशा" कलक्टर की पत्नी बनकर रहे।

राम :— मेरा प्यारा बाबू [आलिंगन] मैं अभी तक तुम्हारे हृदय को पहचान न सका। मैं ने तुम को अकारण उपद्रव किया था। वे सब भूल जाओ, बेटा।

(आशा अस्तव्यस्त दशा में प्रवेश करती है)

आशा :— बाबू, यह क्या कह रहे हो। मैं यह नहीं मानूंगी। पिताजी, क्या आप को इतिहास में ऐसे त्याग का कहीं उदाहरण मिला है?

माता :— बेटी .....

आशा :— नहीं माँ, कभी नहीं।

कुरुप :— आशा, यह क्या कह रही हो।

आशा :— मेरा अर्थ स्पष्ट है।

बाबू :— आशा, ...

आशा :— बाबू मैं कलक्टरानी होना नहीं चाहती।

(सब आपस में देखते रहते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

विश्वास

P. H. Thylambal, II B. Sc.

रामू लालसाहब के घर में नौकर था। उस घर में पाँच बच्चे थे। रामू उन सब को बहुत प्यार करता था और उसका सब काम किया था। लेकिन उन बच्चों को रामू की हँसी उडाने से बडा आनन्द होता था। सदा समय वे बच्चे रामू के फूहडपन, उसका अंधविश्वास आदि पर उसकी हँसी उडाते थे।

उस घर के पास एक साँप रहता था। वह उस घर के आँगन में कभी कभी आता था। रामू एक अंधविश्वासी था। वह साँप को एक देवता मानता था। और वह उस देवता को प्रसन्न करने केलिए उसको दूध लाकर देता था। एक दिन उन बच्चों ने इसको देखा। उन्होंने रामू की हँसी उडायी और कहा कि वे उस साँप को मारकर उस के स्कूल में ले जायेंगे और मास्टर साहब और अपने दूसरे सथियों को दिखलाकर अपना सामर्थ्य दिखायेंगे।

यह सुनकर रामू को बहुत दुःख और भय आया। उन्होंने समझा कि उस देवता की रक्षा करना अपना ही कर्तव्य है। उसने बच्चों को यह समझाने का प्रयत्न किया कि वह पाप है, और उस साँप के एक सौ अंडे हैं। एक साँप को मारने पर सौ साँप उसके घर में आकर उन सबको मारेंगे। इसपर उन बच्चों ने उसकी हँसी उडायी।

एक दिन उन लडकों ने साँप को देखा। सबों ने मिलकर उस को मारा। लेकिन सब लोगों को दिखाने केलिए उसके फन पर न मारा। उसको एक पेटी में डाला और स्कूल को ले जाते समय रामू को वह पेटी दिखायी और कहा कि उसके देवता उसमें सुख से रहती है।

रामू को बहुत दुःख हुआ। उसको न मालूम क्या करना चाहिए। किसी प्रकार उसकी रक्षा करना है।

उन लडनों ने उस पेटी को अपने अध्यापक को भेंट कर दिया। अध्यापक ने सब को दिखाने केलिए उसको खोला। लेकिन उस साँप के फन को न मारने के कारण वह मरा न था। उसको खोलने पर वह क्रोध से फुफकारते हुए बाहर उछल आया। सब लडके भय से उठकर दौडने लगे।

अब रामू अपने साँप की रक्षा करने केलिए दूध लाकर दर्जे के बाहर खडा था। वह दूध को साँप के सामने रखकर उसको नमस्कार करने लगा। लेकिन अब साँप क्रुद्ध था। वह रामू के माथे पर डंक मारा और भाग गया। रामू अबोध होकर गिर गया। उसके माथे से रक्त बह रहा था। मास्टर ने आकर उसको पोंछने पर देखा कि जहाँ रामू उस भगवान का आदर करने केलिए चंदन का तिलक लगाया था वहीं साँप ने काट लिया था।

(अंग्रेज़ी से)